Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की अठारहवीं बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 09 सितम्बर, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की अठारहवीं बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 9 सितम्बर, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक मौसम विभाग, अमौसी, लखनऊ, च.शे. आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक एवं न.दे. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक एवं पूर्व धान प्रजनक, कृषि विभाग, उद्यान विभाग, गन्ना विभाग, रेशम विभाग, मत्स्य विभाग, पशुपालन विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के प्रतिनिधि एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 9 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2015 तक) प्रदेश में हल्के बादल छाये रहेंगे किन्तु प्रदेश के मध्यांचल, बुन्देलखण्ड एवं पश्चिमी क्षेत्रों में वर्षा की कोई सम्भावना नहीं है। प्रदेश के पूर्वी एवं तराई क्षेत्रों में सप्ताह के अन्तिम दो दिनों में स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं हल्की वर्षा मिलने की सम्भावनाऐं हैं। प्रदेश के सभी भागों में दक्षिण–पूर्वी एवं दक्षिण–पश्चिमी हवाएँ 9–12 किमी. प्रति घण्टे की औसत गति से चलने के आसार हैं। इस सप्ताह प्रदेश के पश्चिमी, बुन्देलखण्ड एवं मध्यांचल क्षेत्रों में अधिकतम तापमान औसतन 35–37 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 24–26 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है जो वर्तमान सप्ताह के सामान्य से 2–3 डिग्री सेल्सियस अधिक है। पूर्वी तथा तराई क्षेत्रों में अधिकतम तापमान सप्ताह के अंतिम दिनों में वर्षा से आच्छादित रहने की सम्भावनाओं के साथ औसत रूप से 32–34 एवं न्यूनतम तापमान 23–25 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं जो सामान्य से 1–2 डिग्री सेल्सियस अधिक है। प्रदेश में इस सप्ताह अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता औसत रूप से 70–80 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता 45–55 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह वातावरण शुष्क रहेगा।

कृषि निदेशालय, उ.प्र. से दिनांक 8 सितम्बर, 2015 तक प्राप्त वर्षा आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के 75 जनपदों में अब तक की सामान्य वर्षा 699.0 मिमी. के सापेक्ष 421.3 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य की 60.3 प्रतिशत है। प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक वर्षा 412.2 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य (588.8 मिमी.) का 70.0 प्रतिशत है। मध्य उत्तर प्रदेश में 342.7 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य (677.1 मिमी.) का 50.6 प्रतिशत है, पूर्वी उत्तर प्रदेश में 483.8 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य (812.2 मिमी.) का 59.6 प्रतिशत एवं बुन्देलखण्ड में 326.8 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य (679.5 मिमी.) की मात्र 48.1 प्रतिशत है। अब तक प्राप्त वर्षा ऑकड़ों के अनुसार सामान्य से अधिक वर्षा (120 प्रतिशत अथवा अधिक) के अन्तर्गत जनपद शून्य, सामान्य वर्षा (80–120 प्रतिशत) के अन्तर्गत 16 जनपद, सामान्य से कम (60–80 प्रतिशत) 23 जनपद, 25 जनपदों में न्यून (40–60 प्रतिशत) एवं 11 जनपदों में अति न्यून (40 प्रतिशत से कम) वर्षा प्राप्त हुई है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

- शुष्क वातावरण की स्थिति को देखते हुए खाद्यान्न, दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जीवन रक्षक सिंचाई कर नमी बनाये रखें।
- जिन क्षेत्रों में वर्षा सामान्य से कम हुई है वहां जून रोपित फसल में सूखा के प्रति सहनशीलता बढ़ाने के लिए 2 प्रतिशत यूरिया व पोटाश का छिड़काव करें।
- धान में कल्ले व बाली निकलने की अवस्था नमी के प्रति संवेदनशील है। अतः इन अवस्थाओं में खेत में नमी अवश्य बनाये रखें।
- धान व अन्य खरीफ फसलों में जल उपयोग क्षमता बढ़ाने के लिये खरपतवार नियन्त्रण पर विशेष ध्यान दें। एस.आर.आई. पद्धति से रोपित धान में खरपतवार नियन्त्रण हेतु कोनोवीडर का प्रयोग करें।
- वातावरण में तापक्रम एवं आर्द्रता की अधिकता रहने से रोग एवं कीट प्रभावी होंगे अतः कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश–प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें। कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु कीटनाशी रसायनों का प्रयोग अंतिम उपाय के रूप में करें।
- जिन क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है, वहॉ के सब्जी उत्पादकों को सलाह दी जाती है कि वे अल्प अवधि एवं कम पानी में भी अच्छी उपज प्राप्ति हेतु पालक, मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर, मेथी व धनिया आदि की खेती करें।
- तोरिया, सब्जी मटर तथा आलू के बीज की व्यवस्था सुनिश्चित करें ताकि पर्याप्त नमी की दशा में समय पर बुवाई कर सकें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ। किसान कृषि विभाग की वेबसाइट www.upagriculture.com पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

धान की खेती

- कल्ले फूटते समय व बाली बनते समय नत्रजन की चौथाई मात्रा यूरिया से टॉप ड्रेसिंग करें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।
- रोपित धान में यदि खैरा रोग के लक्षण दिखाई दे रहे हैं तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के साथ 800 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- कल्ले बनते समय यदि 10 हरे फुदके प्रति हिल या 15 भूरे फुदके प्रति हिल दिखाई दें तो रोकथाम हेतु क्यूनालफॉस 25 ईसी. 1.5 ली./हे. अथवा मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. 750 मिली. 500–600 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- दीमक व जड़ की सूड़ी के नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 2.5 ली. प्रति हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें। केवल जड़ की सूड़ी का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फोरेट 10जी 10 किग्रा. 3–5 सेमी. स्थिर पानी में बुरकाव करें।
- तना बेधक, पत्ती लपेटक, बंका कीट एवं हिस्पा कीट के नियन्त्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा कारटॉप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी 18 किग्रा. 3–5 सेमी. स्थिर पानी में बुरकाव करें अथवा क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत को प्रति हे. 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- जीवाणु झुलसा एवं जीवाणुधारी झुलसा के नियंत्रण हेतु 15 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसीन सल्फेट 90 प्रतिशत़4 ग्राम टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत को 500 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. के साथ मिलाकर 500–750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

- देर से बोई गई अरहर के पौधे घने होने की स्थिति में विरलीकरण करें तथा पौधे से पौधे की दूरी 10–12 से.मी. कर दें।
- यदि कृषक अरहर की बुवाई अभी तक नहीं कर सके हैं तो अरहर की प्रजातियों पी.डी.ए. 11, पूसा–9 व पूर्वी उ.प्र. में बहार प्रजाति की बुवाई सितम्बर के प्रथम पखवाड़े तक समाप्त कर लें।
- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- उर्द/मूंग की पत्तियों पर सुनहरे चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गई हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलो मोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या मिथाइल ओ–डिमेटान (25 ई.सी.) 1 लीटर प्रति हे. की दर से दो–तीन छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- मूँगफली की बुआई के 30–35 दिन बाद दूसरी निकाई–गुडाई कर खर–पतवार नियंत्रण करें तथा हल्की–हल्की मिट्टी चढ़ाते रहे। खूटियां (पेगिंग) बनते समय निराई–गुडाई न की जाय।
- मूंगफली में टिक्का रोग लगने का समय है अतः सतर्क रहें। प्रकोप होने पर मैंकोजेब (जिंक मैंगनीज कार्बामेट) 2 किग्रा. या जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.4 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर करें।
- तोरिया की मध्य उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजाति टा–36 (पीली), सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों टा–9, पी.टी.–303 तथा तराई क्षेत्र हेतु संस्तुत प्रजाति पी.टी.–30 के बीज की अग्रिम व्यवस्था कर लें जिससे कि समय से बुवाई हो सके।
- तोरिया का बीज यदि शोधित न हो तो बीज जनित रोगों से सुरक्षा के लिये 2.5 ग्राम थीरम प्रति किग्रा. बीज की दर से बीज को उपचारित करके बुआई करें।

गन्ना की खेती

- पायरिला (फुदका) कीट के नियंत्रण के लिये *इपीरिकैनिया* परजीवी के ककून अथवा अंड समूह को बाहुल्य वाले खेत से निकालकर, जिन खेतों में नहीं है उसमें गन्ना पत्तियों के पीछे नत्थी कर दें। ककून सफेद रंग एवं अंड समूह चटाईनुमा हल्का भूरा रंग का होता है, ये दोनों पत्तियों के पीछे भाग पर पाये जाते हैं। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई. सी. 2 ली. अथवा क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हे. की दर से 800–1000 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिये 50 हजार ट्राइकोग्रामा अंड युक्त ट्राइकोकार्ड प्रति हे. लगायें। कार्ड टुकडों में काटकर पंत्तियों की निचली सतह पर नत्थी कर दें। यह कार्य 10 दिनों के अंतराल पर दोहरायें। ट्राइकोकार्ड भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ या सेंट्रल इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट, जैविक भवन, लखनऊ से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- गन्ने की बढ़वार के अनुसार त्रिकोणात्मक बंधाई करें। इसके लिये एक पंक्ति के दो थान तथा दूसरी पंक्ति के एक थान को एक साथ बांधें।
- गन्ने की सूखी एवं पुरानी पत्तियों को निकाल दें जिससे नाशीकीटों (काला चिकटा, तना बेधक एवं पोरी बेधक) के प्रकोप को कम किया जा सकता है।
- जल किल्लों या देर से निकले किल्लों को काटकर हरे चारे के रूप में प्रयोग करें।

- सूखा होने की स्थिति में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सूखा होने की स्थिति में दीमक का प्रकोप हो सकता है। दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. (6.25 ली./हे.) रसायन का 1500–1600 लीटर पानी में घोल बनाकर जड़ के पास छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ना की बुआई का समय 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर के मध्य उपयुक्त माना जाता है। शीघ्र पकने वाली प्रजातियों को.शा.–8436, को.शा.–88230, को.शा.–95255, को.शा.–96268, को.शा.–98231, को.से.–95436, को.से.–00235, को.से.–03234, को.से.–01235 एवं को.जे.–64, को.शा.–238 के बीज की व्यवस्था कर लें।

बागवानी

- आम, अमरूद, ऑवला, लीची, बेल, बेर, पपीता व नींबू वर्गीय पौधों का रोपण सम्पन्न करें तथा पूर्व में रोपित किये गये जो पौधे मर गये हो उनकी जगह पर नये पौधे लगायें।
- आम के पुराने बागों की जुताई एवं निराई, गुड़ाई का कार्य सम्पन्न करें।
- आम के पुराने बागों में गमोसिस के नियन्त्रण हेतु भूमि में खाद की तरह कॉपर सल्फेट 250 ग्रा., जिंक सल्फेट 250 ग्रा0, बोरेक्स 125 ग्रा. एवं बुझा चूना 100 ग्रा. (10 वर्ष से अधिक आय के पौधे हेतु) प्रति वृक्ष की दर से मिलायें तथा आवश्यकतानुसार तुरन्त सिंचाई करें।
- आम में श्याम वर्ण रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 ग्रा./ली. की दर से) का छिड़काव करें।
- आम के बागों में इस समय जाला बनाने वाले टेन्ट कैटरपिलर कीट का प्रकोप होता है। जाला छुड़ाने वाले यन्त्र से जाले साफ करें तथा प्रभावित प्ररोहों को काटकर कीड़ों सहित जला दें। यदि प्रकोप अधिक हो तो क्विनॉलफॉस (2 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- इस समय तराई क्षेत्रों के आम के बागों में शूट गाल सिला कीट का प्रकोप हो सकता है। इससे बचाव हेतु क्विनॉलफॉस या डाईमेथोएट (2 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग तथा लीची व नींबू में गूँटी बाँधने का कार्य अतिशीघ्र पूर्ण करें।
- ऑवले के पुराने बागों में प्रति पेड़ की दर से 25 किग्रा. गोबर की खाद, 500 ग्रा. नत्रजन, 250 ग्रा. फास्फोरस तथा 375 ग्रा. पोटाश दें।
- ऑवले में फल सड़न की रोकथाम हेतु मौसम साफ होने पर बोरेक्स 6–8 ग्रा./ली. पानी की दर से छिड़काव करें।
- ऑवले के फलों को निक्रोसिस से बचाने के लिए बोरेक्स/बोरिक एसिड 6–8 ग्रा./ली. घोल का 15 दिन के अन्तराल पर दो आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।
- फलदार वृक्षों में इण्डरबेला कीट की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास में रूई भिगों कर छेदों में डालकर मिट्टी से बन्द कर दें।
- केले की अधिक उपज लेने के लिए टिश्यू कल्चर जी.–9 पौध का रोपण अनिवार्य रूप से समाप्त करें तथा रोपण हेतु कम से कम 30 सेमी. ऊंची पौध ही ले।
- केले की अवांछित पुत्तियों तथा सूखी तथा संक्रमित पुत्तियों की कटाई करें तथा प्रति पौध की दर से 50–60 ग्रा. यूरिया मिलायें।
- बनाना बीटिल के नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मिली./ली. का छिड़काव करें अथवा कार्बोफ्यूरान 3–4 ग्रा. या फोरेट 2–2.5 ग्रा./पौध की दर से मिट्टी में मिलायें तथा इतनी ही मात्रा गोफे में डालें।
- केले में पर्णचित्ती, सिगार एण्ड तथा श्याम वर्ण रोगों के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराईड 3 ग्रा./ली. घोल का छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- रबी सब्जियों की बेहन हेतु फूलगोभी, पातगोभी, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई के लिए यह समय उपयुक्त है तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाथीघ्र करें। नर्सरी के लिये लो टनल का प्रयोग करें।
- बैंगन तथा गोभी की खड़ी फसल में 50 किग्रा. यूरिया/हे. की दर से टापड्रेसिंग करें।
- वर्तमान समय में सब्जियों पर कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- लहसुन की खेती हेतु खेत की तैयारी करते हुए बीज की व्यवस्था करें।
- आलू की अधिक पैदावार लेने के लिये अगेती किस्मों कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी बहार, कुफरी सदाबहार तथा कुफरी अशोका किस्मों की बुआई प्रारम्भ करें।
- बुआई के 7–10 दिन पहले शीत भण्डार से बीज आलू को बाहर निकालें।
- यदि शीत गृह में भण्डारण करने से पूर्व आलू उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से आलू निकालकर छॉटने के तुरन्त बाद आलू के कन्दों को बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सुखा लें। अंकुरित आलू बीज को उपचारित न करें।
- शीत भण्डारण में भण्डारित बीज में यदि अंकुर निकल आये तो उनको छॉटकर अलग कर दें। ऐसे बीज को बोने पर अंकुर सूख कर नष्ट हो जायेगें तथा खेत में उनके पुनः अंकुरण में समय अधिक लगेगा।
- शकरकन्द की लताओं की रोपाई करें।
- परवल की गॉठ युक्त लताओं की रोपाई करें।

पशुपालन

- जिन पशुपालकों ने अभी तक पशुओं में गला घोंटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण नहीं कराया है वह पशुओं को शीघ्र टीका लगवायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- नवजात शिशुओं (गोवत्स) की नाभिरज्जू को 2.5 सेमी. की दूरी पर बॉधकर निजर्मीकृत तेज ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन लगाएँ।
- पशुओं के नवजात शिशु को शरीर भार के 1/10 भाग के बराबर खीस तीन बराबर भागों में बॉट कर सुबह, दोपहर एवं शाम को पिलायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें तथा वयस्क पशुओं को खनिज लवण 50 ग्राम प्रतिपशु/प्रतिदिन अवश्य दें।
- अन्तः परजीवियों के नियन्त्रण हेतु बछड़ों/शिशुओं को पिपराजीन 05 मिली. प्रति 10 किलोग्राम शारीरिक भार की दर से तथा वयस्क पशुओं को डिस्टोडीन/एल्बन्डाजॉल 03 ग्राम प्रति पशु की दर से दें।
- वाह्य परजीवियों के नियन्त्रण हेतु बुटाक्स 02 मिली./ली. पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- अन्तः तथा वाह्य परजीवियों के नियन्त्रण हेतु आईवर मैट्रीन इंजेक्शन 2 मिली. पशु की त्वचा में लगाएँ।
- पशुओं को मच्छर व डांस मक्खी से बचाव हेतु धुआँ करें।
- पशुओं को तीन माह में एक बार कृमिनाशी दवा का पान अवश्य करायें।
- हरे चारे के साथ भूसा मिलाकर खिलायें वरना पशुओं में पतले दस्त (पोकनी) की समस्या हो जाती है।
- 12 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से 5 वर्ष तक ब्याज की प्रतिपूर्ति की जाने वाली कामधेनु, मिनीकामधेनु तथा माइक्रोकामधेनु योजना का लाभ पशुपालक अवश्य उठायें।

मत्स्य पालन

- उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर तथा निजी क्षेत्र की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज का वितरण कार्य हो रहा है। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें। संचित मत्स्य बीज को शरीर भार का 1–2 प्रतिशत पूरक आहार दें।
- प्रदेश के जनपदों में राजकीय मत्स्य प्रक्षेत्रों पर भी प्रचुर मात्रा में मत्स्य बीज उपलब्ध है। मत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय या सीधे मत्स्य प्रक्षेत्रों से पूर्व निर्धारित दरों पर क्रय कर मत्स्य बीज संचय कर सकते हैं।
- मत्स्य पालाकों को सलाह दी जाती है कि अपने तालाब में 200 किग्रा./हे. की दर से चूना का बुरकाव कर 1 टन प्रति हे. की दर से गोबर की खाद तालाब में डालकर पानी भर दें। पानी भरने के तीन दिन बाद 10000 मत्स्य बीज (40 प्रतिशत कतला, 30 प्रतिशत रोहू एवं 30 प्रतिशत नैन) प्रति हे. की दर से संचय कराएँ।
- तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का यह उपयुक्त समय है। कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें साथ ही आवश्यकतानुसार सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन भी करायें।
- मत्स्य पालक जनपद स्तर पर कार्यालय मत्स्य पालक विकास अधिकरण में मत्स्य बीज हेतु मांगपत्र दें ताकि समय से उनके तालाब में मत्स्य बीज का संचय हो सके।
- मत्स्य बीज को 15 मिनट तक पानी में पैकेट बिना खोले रखें तत्पश्चात् तालाब में पैकेट से मत्स्य बीज छोड़ें जिससे तापमान के अंतर से मत्स्य बीज को क्षति न हो।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें।
- एकीकृत मत्स्य पालन के तहत तालाब के बंधों पर नींबू, केला, करोंदा पपीता, फूलों व सब्जियों आदि का रोपण करें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम पालन

- शहतूती रेशम कीटपालक मानसून फसल के कीटपालन हेतु तापमान, आर्द्रता एवं पर्याप्त वायु आवागमन का ध्यान रखा जाए, इस हेतु खिड़की एवं दरवाजे खुले रखे जाएं तथा घना कीटपालन न किया जाय।
- कीट बेड की सफाई प्रतिदिन क्लीनिंग नेट के प्रयोग से की जाये तथा हाथ से कम से कम कीड़ों को छुआ जाये। गीली पत्तियॉ न खिलाई जाएं। कीटपालन बेड की नमी कम करने हेतु जली धान की भूसी का भी प्रयोग किया जाए। मोल्ट खोलने से आधा घंटे पहले वेट केयर/विजेता पाउडर का छिड़काव किया जाये।
- टसर रेशम उत्पादन हेतु अम्पतिया बीजू कोये की छंटाई करके स्वस्थ्य कायों को बीजागार में संरक्षित करायें तथा डाबा फसल के कीटाण्ड उत्पादन हेतु बीजागार की तैयारी करें।
- मानसून सत्र का वृक्षोरोपण 15 सितम्बर, 2015 तक जारी रखें तथा पौध रोपण के पश्चात् चारों तरफ की मिट्टी को दबा दें साथ ही सिंचाई कर दें। नये पौध रोपण करते समय पौधों से 90 प्रतिशत पत्ती हटा दें।
- ऐरी रेशम कीटपालक उन्नत किस्म की देर से बोयी जाने वाली अरण्डी के बीज प्राप्त कर तैयार की गयी भूमि में अरण्डी की बुआई करें।
- रेशम कीटपालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी प्रभारी रेशम अधिकारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।

वानिकी

- पौधों में नमी बनाये रखें तथा जिन स्थानों पर पौधे मर गए हों उनके स्थान पर नये पौधे रोपित करें।
- नई पौधशाला स्थापित करने हेतु मिट्टी का परीक्षण करायें। यदि मिट्टी उसरीली हो तो जिप्सम मिला दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 23 सितम्बर, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।